स्वामी रमेश चन्द्र शुक्ल

होमियोपैथी चिकित्सा

सभी रोगों के निदान हेतु एक सर्वोत्तम पुस्तक

- होमियोपैथी की 77 प्रमुख औषधियों के विवरण
- होमियोपैथी द्वारा घरेलू इलाज
- औषधियों की प्रयोगविधि एवं सावधानियाँ

होमियोपैथी एक चमत्कारिक चिकित्सा

लेखक
रमेश चन्द्र शुक्ल

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

प्रकाशक

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
☎ 23240026, 23240027 • *फैक्स:* 011-23240028
E-mail: info@vspublishers.com • *Website:* www.vspublishers.com

शाखा: हैदराबाद

5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)
बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद - 500 095
☎ 040-24737290
E-mail: vspublishershyd@gmail.com

शाखा : मुम्बई

जयवंत इंडस्ट्रिअल इस्टेट, 1st फ्लोर-108, तारदेव रोड
अपोजिट सोबो सेन्ट्रल, मुम्बई - 400 034
☎ 022-23510736
E-mail: vspublishersmum@gmail.com

फ़ॉलो करें:

© **कॉपीराइट:** वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-521509-0-8

DISCLAIMER

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।

पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत बेवसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं।

इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

प्रकाशकीय

वी एंड एस पब्लिशर्स अनेक वर्षों से समाज के प्रत्येक वर्गों के लिये आत्मविकास, सामान्य ज्ञान, साहित्य तथा चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें प्रकाशित करते आ रहे हैं। इसी क्रम में जब हमारा ध्यान होमियोपैथी चिकित्सा की ओर गया तो हमने **'होमियोपैथी एक चमत्कारिक चिकित्सा'** नामक पुस्तक प्रकाशित किया है।

आज की आधुनिक जीवनशैली वास्तव में कई तनावजनित रोगों को जन्म दे रही है। होमियोपैथी में इन रोगों का ईलाज अपेक्षाकृत आसान और कम खर्च में संभव होने के कारण यह आम लोगों के ज्यादा अनुकूल भी है। यों तो बाजार में होमियोपैथी चिकित्सा की कई पुस्तकें उपलब्ध हैं, मगर प्रस्तुत पुस्तक में सर्दी जुकाम, बुखार, मधुमेह रक्तचाप ,हृदय रोग, कैंसर, चर्म रोगों, मुहाँसे, फोड़े-फुन्सियाँ, एवं शिशु रोगों सम्बन्धी चिकित्सा के लिये विशेषतौर पर चुने हुये 77 प्रमुख औषधियों के विवरण सहज और आसान हिन्दी भाषा में दिये गये हैं। होमियोपैथी के बारे में सभी के लिये यह जानना आवश्यक है, कि यह चिकित्सा पद्धति एलोपैथी चिकित्सा से बिलकुल ही भिन्न है। होमियोपैथी ईलाज में एलोपैथी की तरह न तो किसी प्रकार का साइड इफेक्ट होता और न ही इसके इलाज के पहले किसी रोगी को किसी महँगे टेस्ट की आवश्कता पड़ती है। इसलिए होमियोपैथी आमजनों के लिये अधिक सुविधाजनक एवं उपयोगी है।

होमियोपैथी के लेखक स्वामी रमेश चंद्र शुक्ल की दो पुस्तकें Yogasanas and Pranayams एवं Reiki and Alternative Therepies हमारे प्रकाशन द्वारा पूर्व में प्रकाशित की जा चुकी हैं, जिसे पाठकों की ओर से भरपूर सराहना मिली है।

हमारी ओर से प्रस्तुत पुस्तक को त्रुटिरहति रखने का यथासंभव प्रयास किया गया है। फिर भी किसी प्रकार की भूल-सुधार के लिये आप हमारे ई मेल पर इसकी सूचना दे सकते हैं, तकि आगामी संस्करण में भूल-सुधार किया जा सके।

नोट : पाठकों को हमारा सुझाव है कि पुस्तक में बताये गये किसी भी दवा को प्रयोग में लाने के पूर्व होमियोपैथी के किसी योग्य एवं अनुभवी चिकित्सक से इसके बारे में अवश्य सलाह लें।

विषय-सूची

भूमिका 7

खण्ड : 1

1. होमियोपैथी एक परिचय 11
2. जहरीले तत्त्वों से बने मूलार्क के लिए आवश्यक निर्देश..... 15
3. सामान्य निर्देश तथा परहेज..... 17
4. होमियोपैथी के इलाज में सावधानी 19
5. औषधि प्रयोग विधि..... 22
6. होमियोपैथिक औषधियाँ 24

खण्ड : 2
चिकित्सा प्रकरण

1. बुढ़ापे में वरदान होमियोपैथिक चिकित्सा 94
2. पेट सम्बन्धी रोग..... 98
3. मुख के रोग 111
4. गला (Neck) 112
5. नाक (Nose) 117
6. दाँत (Tooth) 118
7. कान (Ear).....119
8. आँख (Eye) 120
9. सिर (Head)..... 122
10. ज्वर (Fever) 124

11. फेफड़ा 126
12. मूत्र रोग 128
13. त्वचा के रोग 131
14. मोटापा (Obesity) 133
15. पुरुष प्रजनन अंगों के रोग 134
16. स्त्री रोग (Female Diseases) 137
17. हड्डियों के रोग और जोड़ों के दर्द (Bones, Jonts and Muscular Pains) . 142
18. हृदय रोग (Heart Diseases) 147
19. मधुमेह (Diabetes) 150
20. बच्चों के रोग (Diseases of Children) 152
21. मानसिक रोग (Mental Diseases) 154
22. अन्य विभिन्न रोगों में सहायक होमियोपैथी दवायें 159

भूमिका

होमियोपैथी के आविष्कारक जर्मनी के डाक्टर सैमुएल हैनिमैन थे। हालाँकि होमियोपैथी का आविष्कार हुए लगभग 250 वर्ष हो चुके हैं, फिर भी इस चिकित्सा पद्धति की लोकप्रियता दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है। इस चिकित्सा पद्धति के लोकप्रिय होने के अनेक कारण हैं। सबसे प्रमुख कारण यह है कि अन्य चिकित्सा पद्धतियों की अपेक्षा होमियोपैथी कम खर्चीली है। आज के डाक्टर मरीजों को बड़ी खर्चीली मेडिकल जाँच (टेस्ट) लिखते हैं, किन्तु इस चिकित्सा पद्धति में ऐसी जाँचों को विशेष महत्त्व नहीं दिया जाता है। इसके अलावा इस पद्धति के अतिरिक्त परिणामों (साइड इफेक्ट्स) की सम्भावना भी नहीं के बराबर है। सुविधा और सुरक्षा की दृष्टि से होमियोपैथी एक साधारण आदमी के लिए अत्यन्त अनुकूल है, इतना ही नहीं तीव्र या शल्यचिकित्सकीय स्थितियों से बचने के लिए इस चिकित्सा पद्धति का उपयोग बड़ा ही उपयोगी माना गया है। होमियोपैथिक औषधियाँ सुरक्षित, सस्ती, व्याधिनाशक और आसानी से उपलब्ध होने के साथ-साथ छोटे शिशुओं के लिए भी बड़ी ही प्रभावशाली है। इसमें एलोपैथिक दवाओं के विपरीत प्रभावों को भी ठीक करने की अद्‌भुत क्षमता है।

होमियोपैथी का सम्बन्ध मनुष्य की आंतरिक शक्तियों से है। मनुष्य के स्थूल शरीर पर उसके विचारों, मनोभावों और अन्य सूक्ष्म तत्त्वों का भी बहुत प्रभाव पड़ता है, हमारे स्थूल शरीर में जो अस्वस्थता आती है, उसका सूत्रपात हमारे सूक्ष्म मन में होता है और रोग का आरम्भ स्थूल शरीर में ही नहीं बल्कि सूक्ष्म मन में तथा हमारी आंतरिक जीवनी शक्ति में भी होता है। इसी को आधार मानकर होमियोपैथी में सूक्ष्म औषधियों का भी प्रयोग किया जाता है, इसीलिए होमियोपैथी एलोपैथी की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली तरीके से काम करती है।

होमियापैथी के बारे में यह भी जानना आवश्यक है कि यह चिकित्सा पद्धति एलोपैथी से पूर्णतः भिन्न है। इसे किसी भी प्रकार से एलोपैथी चिकित्सा

के पूरक के रूप में नहीं देखना चाहिए। आज का मानव अनेक असाध्य और कठिन रोगों से ग्रस्त है। उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, मधुमेह, कैंसर, अस्थमा आदि अनेक रोग बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं, जिनका एलोपैथी के डाक्टरों के पास कोई निश्चित और स्थायी समाधान नहीं है। ऐसी स्थिति में होमियोपैथी चिकित्सा की उपयोगिता और भी बढ़ जाती है। आज के प्राय: अधिकतर रोग तनाव जनित हैं। इन परिस्थितियों में मेरा मानना है कि होमियोपैथी चिकित्सा से इस दिशा में प्रयोग करने से अद्‌भुत परिणाम देखने को मिलेंगे। मैं स्वयं हीलिंग के क्षेत्र में वर्ष 1997 से कार्यरत हूँ तथा योग की भाँति होमियोचिकित्सा से भी मेरा बड़ा लगाव रहा है। मैं होमियोपैथी की दवाइयों का स्वत: प्रयोग करता आया हूँ और इसके परिणाम स्वयं देखे हैं। मैं अपने प्रिय होमियोपैथी के चिकित्सक डा. बन्सल, (सोनीपत) तथा डा. चन्द्रभूषण त्रिपाठी जी का बहुत ही आभारी हूँ, जो वर्षों से होमियोपैथी का इलाज करते आ रहे हैं तथा मेरा इस चिकित्सा पद्धति में मार्गदर्शन किया है। डा. कल्पना माथुर तथा डा. श्रीमती मधु त्रिपाठी जो होमियोपैथी चिकित्सा में बाल एवं स्त्री रोगों की विशेष चिकित्सिका हैं, मैं मार्गदर्शन हेतु उनका भी आभारी हूँ।

मैंने 24 जून 2013 से 29 जून 2013 तक सोनीपत जिले में स्थित ओशाधारा केन्द्र में देश के जाने-माने होमियोपैथी के अनेक विशेषज्ञों के साथ होमियोप्रज्ञा कार्यक्रम सदगुरु ओशो सिद्धार्थ के सानिध्य में किया है, जिसमें मुझे इस चिकित्सा पद्धति के सम्बन्ध में अद्‌भुत ज्ञान प्राप्त हुआ है, मैं उनके प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ।

इस पुस्तक के लेखन का मुख्य उद्‌देश्य सस्ती, सुलभ और प्रभावकारी चिकित्सा को जन-जन तक पहुँचाना है।

स्वामी रमेश चन्द्र शुक्ल
अध्यक्ष
रेकी कुण्डलिनी योग थिरेपी सेन्टर

खण्ड : 1

होमियोपैथी एक परिचय

जर्मनी के सैक्सनी प्रदेश के मेसेन नामक ग्राम में सन् 1755 ई. में होमियोपैथी के विज्ञान के आविष्कारक महात्मा हैनिमैन का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था। उन्होंने सन् 1779 ई. में 24 साल की अवस्था में एम.डी एलोपैथी की डिग्री प्राप्त की तथा लगभग 10 वर्षों तक एलोपैथी की प्रैक्टिस भी करते रहे, किन्तु उन्होंने इस उपचार को अपूर्ण तथा दोषपूर्ण समझकर इसका परित्याग कर दिया तत्पश्चात् वे पुस्तक प्रणयन तथा रसायन शास्त्र के अध्ययन एवं उन्नति की ओर आकृष्ट हुए। अनेक भाषाओं में पुस्तकों के अनुवाद करने से आपकी प्रसिद्धि बढ़ने लगी। 1790 में डाक्टर कालेन की लिखी हुई अंग्रेजी 'मेटेरिया मेडिका' का जर्मन भाषा में अनुवाद करते समय 'सिनकोना' नामक दवा की व्याख्या देखकर उन्होंने यह दवा स्वयं सेवन की, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें कम्प ज्वर हो गया। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि किसी भी दवा में रोग उत्पन्न करने और उसका नाश करने की शक्ति होती है। इस दृष्टि से उन्होंने बहुत सी दवाओं का अपने ऊपर भी प्रयोग किया और अपनी चिकित्सा के आविष्कार का मूल सूत्र निर्धारित किया जो निम्न है।

किसी स्वस्थ शरीर में किसी एक दवा का बार-बार प्रयोग करते रहने पर दवा के कुछ लक्षणों से कितने ही रोग सदृश्य लक्षण प्रकट होते हैं यदि किसी बीमारी में वे सब लक्षण प्रकट हो, तो उस रोग में उसी दवा की सूक्ष्म मात्रा प्रयोग कर जो चिकित्सा की जाती है उसे ही होमियोपैथी चिकित्सा कहते हैं।

सिद्धान्त : Simla- Simibus Curantur अर्थात् समः सम शमयति। 'सदृश विधान' शब्द कहने से यह बोध होता है कि स्वस्थ शरीर में यदि विष की मात्रा में कोई दवा सेवन कर ली जाये तो रोग बताने वाले कितने ही लक्षण पैदा हो जाते हैं और ये ही लक्षण उस दवा के भी हैं। जब किसी रोग में ये सब लक्षण दिखायी दे तो उसमें शक्तिकृति की हुई दवा प्रयोग करने पर उस रोग में आराम मिल जाता है। होमियोपैथिक विज्ञान स्वीकार करता है कि रोग स्थूल शरीर में नहीं, बल्कि सूक्ष्म जीवनी शक्ति में होता है। स्थूल शरीर में जो रोग के लक्षण

दिखायी देते हैं, वे मूल रोग का परिणाम होते हैं। मूल रोग के स्तर तक पहुँचने के लिए सूक्ष्म औषधि का होना आवश्यक है, यदि औषधि स्थूल होगी तो वह सूक्ष्म रोग को नियन्त्रित नहीं कर सकती है।

रोग का विकास अन्दर से बाहर की ओर होता है, अत: रोग की निवृत्ति का क्रम भी इसी दिशा में होना चाहिए।

यदि बाह्य औषधियों के प्रयोग से स्थूल शरीर पर स्थित लक्षणों को दूर करने का प्रयास किया गया तो रोग निवृत्ति का अप्राकृतिक क्रम हो जायेगा इससे रोग के बढ़ने की ही सम्भावना बनी रहेगी।

इस प्रकार होमियोपैथी का मूल सिद्धान्त यह है कि जो दवा स्वस्थ व्यक्ति में विकृतियाँ उत्पन्न कर सकती है, वही किसी रोग के कारण अस्वस्थ व्यक्ति में दिखायी दे तो उसी दवा को सक्षम बनाकर देने से उन विकृतियों की निवृत्ति की जा सकती है। इसका अर्थ यह हुआ कि जो दवा शरीर को बिगाड़ने की सामर्थ्य रखती है, वही शरीर को पूर्णतया स्वस्थ भी बना सकती है।

होमियोपैथिक दवा इतनी सूक्ष्म होती है कि इससे उत्पन्न हुआ रोग शरीर में स्थायी रूप से नहीं रह पाता, बल्कि मूल रोग को अपने अन्दर समाहित करने के पश्चात् स्वयं भी नष्ट हो जाता है इसलिए रोगी किसी नये रोग से नहीं जुड़ता है। इसके विपरीत एलोपैथिक दवा से उत्पन्न नया रोग स्थूल प्रकृति का होता है, इसलिए उसमें अपने आप नष्ट होने की सामर्थ्य नहीं होती है। मूल रोग तो ज्यों का त्यों बना रहता है। इसके अतिरिक्त एक नया रोग और उत्पन्न हो जाता है, जिससे रोगी पहले से भी ज्यादा अस्वस्थ दिखायी देता है।

होमियो चिकित्सकों के लिए आवश्यक निर्देश

1. किसी भी बीमारी की चिकित्सा करते समय रोगी के धातुगत लक्षण मानसिक लक्षण तथा रोग के लक्षणों के साथ जिस दवा के लक्षणों का सबसे अधिक समानता हो, उस दवा का उस रोग में प्रथम प्रयोग करना चाहिए।
2. लेखक या मुद्रक किसी भी तेज या जटिल रोगों की चिकित्सा की सलाह नहीं देता है, अतएव किसी प्रकार के वाद-विवाद या दुर्घटना के लिए वे स्वयं जिम्मेदार होंगे।
3. कुछ दवाओं को छोड़कर प्राय: सभी दवायें हानिरहित एवं प्रभावशाली हैं। होमियोपैथिक दवायें शिशु, युवा तथा बुजुर्ग एवं स्त्रियों के लिए समान रूप से लाभदायक होती हैं फिर भी रोग के लक्षण समझ में न

आने पर उन्हें अपने वरीय चिकित्सक से उचित सलाह-परामर्श के बाद ही लेना चाहिए।

4. कैम्पर को सभी दवाओं से अलग रखें तथा याद रखें कि कास्टिकम से पूर्व या पश्चात् फास्फोरस का प्रयोग वर्जित है। कार्बोवेज ड्रासेरा, लाइकोपोडियम, लैकेसिक का भी उपयोग बार-बार न करें।
5. औषधियों को धूल, धुआँ एवं गन्ध वाली वस्तुओं से दूर रखें।
6. निमोनिया की उग्र अवस्था या रोग की बेचैनी में, बच्चों में आर्सेनिक का प्रयोग न करें।
7. तेज ज्वर में स्पाइजेलिया और नेट्रमम्यूर का भी प्रयोग न करें।
8. सल्फर के पूर्व कल्केरिया कार्व और सल्फर के बाद लाइकोपोडियम का प्रयोग न करें।
9. किसी भी दवा के प्रतिक्रिया (रिएक्शन) करने पर नक्सबोमिका 30 या कैम्फर का प्रयोग करें।
10. आपने जिस भी दवा का प्रयोग किया है, उसे अपने चिकित्सक को अवश्य बता दीजिए ताकि उसे दवा के अगले चुनाव में आसानी हो और रोगी की हालत और नहीं बिगड़े।
11. यदि किसी दवा की 2-3 मात्राओं से रोग में कमी मालूम पड़े तो जब तक उस दवा का प्रभाव समाप्त न हो जाये यानी कि जब तक उस दवा के प्रभाव से साफ-साफ फायदा होता दिखायी देता रहे, तब तक उस दवा की दूसरी मात्रा का प्रयोग नहीं करना चाहिए और न ही कोई दूसरी दवा देनी चाहिए।
12. किसी औषधि का सेवन करते ही अगर किसी पुरानी बीमारी के सारे लक्षण गायब हो जाये तो समझना चाहिए कि दवा का चुनाव ठीक नहीं हुआ है और इस दवा से वह रोग ठीक नहीं होगा।
13. यदि किसी दवा के प्रयोग करने पर रोग बढ़ जाये तो यह समझना भूल होगी कि दवा का चुनाव ठीक-ठीक नहीं हुआ है। ऐसे समय 2-4 दिन दवा बन्द रखने पर बढ़े हुए लक्षण अपने आप कम होने लगते हैं और कुछ दिन इन्तजार करने पर रोग भी धीरे-धीरे ठीक होने लगता है।
14. रोगी लक्षण के साथ दवा के लक्षण मिल जाने पर भी जब चुनी हुई दवा से फायदा या स्थायी लाभ न हो तो उस समय दवा को एकाएक न बदलकर केवल उस दवा की शक्ति में ही बदलाव करने से रोगी

को फायदा हो सकता है। प्रत्येक बार केवल शक्ति को ही बदल कर देने से भी लाभ होने लगेगा। यहाँ तो यह देखा गया है कि पानी में मिली दवा को रोज सवेरे सेवन करने के समय शीशी का पेंदा हाथ के ऊपर पाँच-छह बार जोर-जोर से ठोक लेना चाहिए इससे भी शक्ति में परिवर्तन होने से रोगी को अधिक लाभ होता है।

15. पुरानी जटिल बीमारियों की चिकित्सा करते समय यदि साधारण रोग के लक्षणों पर अधिक ध्यान न रखा जाये तो भी कोई विशेष नुकसान नहीं होता है, पर रोग का मूल कारण अर्थात् शरीर में कौन-सा विष छिपा हुआ है और वह कहाँ से पैदा हुआ है, चिकित्सक को सर्वप्रथम इस पर ध्यान देना चाहिए।
16. दवा सेवन करते समय पान के साथ चूना, सोडा लेमिनेड सिरका या तीखे पदार्थों को छोड़ दें अथवा दाँतों या मुख को अच्छी तरह साफ करके ही दवा की खुराक लेनी चाहिए।
17. आयुर्वेदिक या एलोपैथिक चिकित्सा के बाद यदि कोई रोगी होमियोपैथी चिकित्सा कराने आये तो पहले पहल 6ठी शक्ति से और होमियोपैथी से छोड़े हुए रोगी को 30वीं शक्ति से चिकित्सा प्रारम्भ करनी चाहिए।

1

जहरीले तत्त्वों से बने मूलार्क के लिए आवश्यक निर्देश

मूलार्क (मदर टिंचर) की सेवन विधि

ध्यान रखे कि जो मूलार्क रासायनिक तत्त्वों से अथवा जहरीले सर्पों या संखिया धतूरा इत्यादि से बनते हैं, उनके मूलार्क सेवन नहीं किये जाते हैं तथा ऐसी दवाइयों को कम पोटेन्सी जैसे 3, 6, 30 से नीचे की पोटेन्सी में प्रयोग नहीं करना चाहिए।

जो मूलार्क सेवन किये जा सकते हैं, उनकी 5 बूँद से 15 बूँद तक मात्रा एक बड़े चम्मच में सादे पानी में मिलाकर सेवन करना चाहिए।

पोटेन्सी (शक्ति) : यह पोटेन्सी एक से एक लाख तक होती है, इसे निम्न प्रकार से जाना और लिखा जाता है–

कम पोटेन्सी	1, 3, 6, 12, 30 सीसी
मध्यम पोटेन्सी	200–1000 सीसी
ज्यादा पोटेन्सी	5000,–10,000, 50,000–10,0000 सीसी
सीसी	सेटेसीमल पोटेन्सी अनुपात 1+99
X एक्स	पोटेन्सी डेसीमल पोटेन्सी अनुपात 1+9

नोट : अंग्रेजी का अक्षर एम (M) 1000 पोटेन्सी को सूचित करता है। जैसे–

1M = 1000, 10M = 10,000, 50M = 50,000

CM = 100000

पोटेन्सी का चुनाव

उच्च और मध्यम पोटेन्सी

1. जो बच्चे बहुत संवेदनशील हों
2. बहुत बुद्धिजीवी, कल्पनाशील तथा नर्वस और भावुक व्यक्ति
3. दिमागी बीमारियों वाले व्यक्ति
4. जो क्रूड या निम्न पोटेन्सी की दवायें कभी पहले ले चुके हों

निम्न पोटेन्सी

1. कमजोर रोगी जिनकी जीवन ऊर्जा कम हो
2. गूँगे-बहरे तथा अल्प विकसित रोगी
3. प्राणघातक बीमारी हैजा, डायरिया, कैंसर आदि
4. शरीर से ताकतवर किन्तु मन्दबुद्धि वाले लोग

होमियोपैथी की औषधियों की पोटेन्सी दो तरह की होती है जिनके लिए अंग्रेजी के दो अक्षर प्रयोग किये जाते है। सी (C) और एक्स (X)। सी पोटेन्सी के लिए जो गणित प्रयोग किया जाता है, उसका फार्मूला 1+99 = 100 होता है। इसका तात्पर्य यह है कि मूल तत्त्व का एक भाग और रिक्टीफाइड स्प्रिट या अल्कोहल अथवा सुगर ऑफ मिल्क का 99 भाग प्रयोग होता है।

एक्स-पोटेन्सी के लिए मूल तत्त्व का एक भाग और रिक्टीफाइट स्प्रिट अथवा सुगर ऑफ मिल्क 9 भाग (1+9 = 10) (C) सी को सेटेलिमल पोटेन्सी कहते हैं और (X) एक्स को डेसीमल पोटेन्सी कहते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि 6 पोटेन्सी तक मूल तत्त्व को दूरदर्शी यन्त्र (Microscope) से देखना सम्भव है।